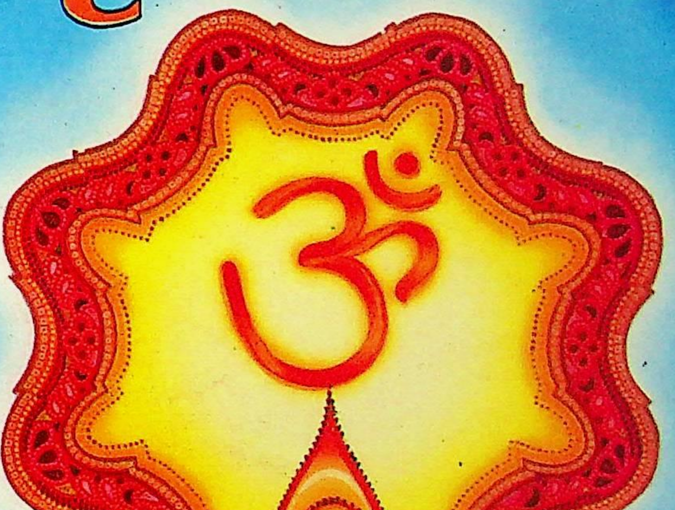
श्री गायत्री

सहस्त्र नाम



ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।

यह भगवती गायत्री के एक सहस्त्र आठ नाम हैं। इनका पाठ करना महान पुण्यप्रद और सम्पूर्ण पापों का उच्छेद करने वाला है। प्रतिदिन इनका इच्छानुसार पाठ तथा अष्टमी तिथि को सम्पूर्ण पाठ विशेष रूप से सम्पत्तिदायक है। जिस घर में गायत्री के इन नामों का लेखन होता है वहां भय कभी नहीं टिक सकता। चंचला होती हुई भी लक्ष्मी उसके घर में स्थिर होकर विराजमान रहती है। भौतिक दुःखों और रोगों का विनाश करने वाले इस सहस्त्रनामों का पाठ करते रहने से कलियुग में प्रत्येक पनुष्य सुखी हो सकता है।

— **देवी भागवत/११-१२**

गायत्री महामंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो योनः प्रचोदयात् ।

The Gāyatrī Mantra

Oṃ bhur bhuvah swaḥ tat savitur vareṇyam, bhargo, devasya dhimahi, dhiyo yo naḥ pracodayāt

गायत्री सहस्त्रनामावली

गायत्री स्तवन, गायत्री चालीसा, गायत्री कवच और कामनासिद्धि के लिए गायत्री मंत्र के विविध प्रयोगों की जानकारी सहित

संग्रहकर्त्ता—
पं. ज्वालाप्रसाद चतुर्वेदी

मूल्य : 20.00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (उ.प्र.)

प्रकाशक : **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार
फोन : (01334) 226297

वितरक : **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

दिल्ली विक्रेता : **गगन बुक डिपो**
4694, बल्लीमारान, दिल्ली-110006
फोन : (011) 23950635

जम्मू विक्रेता : **पुस्तक संसार**
167, नुमाइश का मैदान, जम्मू तवी (ज.का.)

संस्करण : सन् 2004

मुद्रक : राजा ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली-92

GAYATRI SAHASRANAMAVALI

Compiled By : Pt. Jawala Prasad "Chaturvedi"
Published By : Randhir Prakashan, Hardwar (INDIA)

गायत्री मंत्र

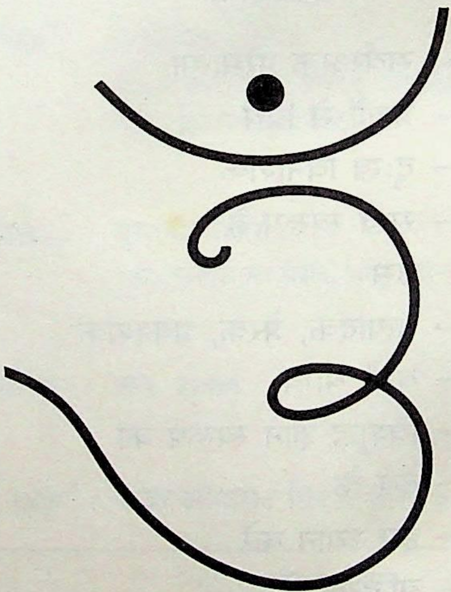
ोइम भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
गर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः
चोदयात् ।

शब्दार्थ

ोइम	—	सर्वरक्षक परमात्मा
ूः	—	प्राणों से प्रिय
ुवः	—	दुःख विनाशक
वः	—	सुख स्वरूप है
त्	—	उस
सवितुः	—	उत्पादक, प्रेरक, प्रकाशक
रेण्यं	—	वरने योग्य
भर्गो	—	विशुद्ध ज्ञान स्वरूप का
देवस्य	—	देव के
धीमहि	—	हम ध्यान करें
धियो	—	बुद्धियों को
यो	—	जो
नः	—	हमारी
प्रचोदयात्	—	शुभ कार्यों में प्रेरित करे

भावार्थ

हम उस प्राण स्वरूप दुःख विनाशक सुख स्वरूप श्रेष्ठ तेजस्वी और प्रेरक देव स्वरूप परमात्मा को अन्तरात्मा में धारण करें और वह हमारी बुद्धि को शुभ कार्यों में लगाये।



गायत्री महिमा तथा पूजन विधि

भगवान नारायण कहते हैं—नारद! भिन्न पाद वाली गायत्री ब्रह्महत्या के पाप का शमन करती है। अभिन्न पद वाली गायत्री का जप किया जाय तो पुरुष पाप का भागी बन जाता है। जितना जप करना अभीष्ट हो, उसके आठवें भाग में गायत्री के चौथे पाद का जप करना आवश्यक है। इस प्रकार जप करने वाले द्विज को भी ज्ञानी समझना चाहिए। वह सायुज्य पद का अधिकारी हो जाता है।

विद्वान को जल में खड़े होकर कभी भी गायत्री का जप नहीं करना चाहिए, क्योंकि कुछ महर्षियों का यह कथन है कि यह अग्निमुखी कहलाती है। संध्या-कर्म समाप्त करके स्वयं अग्निहोत्र भी करे। होम करने के पश्चात सावधान होकर पांच देवताओं की पूजा करनी चाहिए। वे पांच देवता हैं—भगवती शिवा, शंकर, गणेश, सूर्य और विष्णु। पुरुषसूक्त, व्याहृति, मूलमंत्र अथवा 'श्रीश्चऽते॰' इस मंत्र से पूजा की जा सकती है। मंडल के मध्य भाग में भवानी की पूजा होनी चाहिए। ईशान कोण में माधव की, अग्निकोण में गिरजापति शंकर जी की, नैऋत्य कोण में गणेश की और वायव्य

कोण में सूर्य की क्रमशः स्थापना करके पूजा करे। सोलह प्रकार के उपचारों से सोलह ऋचाओं का पाठ करके मनुष्य इन देवताओं को वस्तुएं अर्पण करे। सर्वप्रथम देवी की पूजा करके क्रमशः अन्य देवताओं का पूजन करना चाहिए। कारण, देवी की पूजा से बढ़कर पुण्य कहीं भी नहीं दिखलाई पड़ता। इसीलिए संध्याओं में संध्या की उपासना की जाती है। अक्षत् से भगवान विष्णु की, तुलसी से गणेश की, दूर्वा से दुर्गा की और केतकी पुष्प से शंकर की पूजा नहीं करनी चाहिए। मालती, चमेली, कुटज, पनस, किंशुक, बकुल, कुन्द, लोध, करवीर, शिंशपा, पराजिता, अगस्त्य, मन्दार, सिन्दुवार, पलास, दूर्वा, विल्वपत्र, कुशकी मंजरी, शल्लकी, माधवी, मन्दार का पुष्प, केतकी, कचनार, कदम्ब, नागकेसर, चम्पा, जूही और तगर आदि पुष्प भगवती को अत्यन्त प्रिय हैं। गुग्गुल से भवानी के लिए धूप और तिल के तेल से दीपक प्रज्वलित करना चाहिए। इस प्रकार देवी की पूजा करके मूलमंत्र का जप करे। बुद्धिजन यों पूजा समाप्त करने के बाद ही वेद के अध्ययन में तत्पर हों।

————

श्री गायत्री सहस्त्रनाम

एक बार नारदजी ने पूछा—भगवन्! आप अखिल शास्त्रों के पारगामी विद्वान हैं। किससे ब्रह्मज्ञान होता है? मोक्ष साधन में कौन उपयोगी है? किसके अनुष्ठान से ब्राह्मण को सद्गति प्राप्त होती है और किसके प्रभाव से मृत्यु पास नहीं आती? वह सारा प्रसंग आप आद्योपान्त कहने की कृपा कीजिए।

भगवान नारायण कहते हैं—महाप्राज्ञ! तुम्हें धन्यवाद है। तुमने बड़ी अच्छी बातें पूछी हैं, सुनो! मैं तुम्हारे सामने गायत्री के एक सहस्त्र आठ नामों का वर्णन करूंगा। ये दिव्य नाम परम मंगलकारी हैं। इनका श्रवण करने से पापों का लेशमात्र भी शरीर में नहीं रह सकता। अब साधकों के कल्याणार्थ भगवती का ध्यान कहता हूं, जो रक्त, श्वेत, पीत, नील और धवल वर्णों के (श्रीमुखों से) सम्पन्न हैं तीन नेत्रों से जिनका विग्रह देदीप्यमान हो रहा है, जिन्होंने अपने रक्तवर्ण शरीर को लाल कमलों की माला से सजा रखा है, जो अनेक मणियों से युक्त हैं, जो कमल के आसन पर विराजमान हैं, जिनकी दो हाथों में कमल और कुण्डिका एवं दो हाथों में वर तथा अक्षमाला सुशोभित हैं, उन हंस की सवारी करने वाली, कुमारी अवस्था से सम्पन्न भगवती गायत्री की मैं उपासना करता हूं। उनके ये १००८ पवित्र नाम यह हैं—

श्री गायत्री सहस्र नामावली

(अकारादि क्रमानुसार)

१. अचिन्त्यलक्षणा
२. अव्यक्ता
३. अर्थमातृमहेश्वरी
४. अमृता
५. अर्थवमध्यस्था
६. अजिता
७. अपराजिता
८. अणिमादिगुणाधारा
९. अर्कमंडलसंस्थिता
१०. अजरा
११. अजा
१२. अपरा
१३. अधर्मा
१४. अक्षसूत्रधरा

१५. अधरा
१६. अकारादिक्षकारान्ता
१७. अरिषड्वर्गभेदिनी
१८. अञ्जनाद्रिप्रतीकाशा
१९. अञ्जनाद्रिनिवासिनी
२०. अदितिः
२१. अजपा
२२. अविद्या
२३. अरविन्दनिभेक्षणा
२४. अन्तर्वहिःस्थिता
२५. अविद्याध्वंसिनी
२६. अन्तरात्मिका
२७. उषा
२८. अजमुखावासा
२९. अरविन्दनिभानना
३०. अर्धमात्रा

३१. अर्थदानाज्ञा
३२. अरिमण्डलमर्दिनी
३३. असुरघ्नी
३४. अमावस्या
३५. अलक्ष्मीघ्नन्त्यजार्चिता
३६. आदिलक्ष्मी
३७. आदिशक्तिः
३८. आकृति
३९. आयतानना
४०. आदित्यपदवीचारा
४१. आदित्यपरिसेवता
४२. आचार्या
४३. आवर्तना
४४. आदिमूर्तिआचारा
४५. निवासिनी

४६. आग्नेयी
४७. आमरी
४८. आद्या
४९. आराध्या
५०. आसनस्थिता
५१. आधारनिलया
५२. आधारा
५३. आकाशान्तनिवासिनी
५४. आद्याक्षरसमायुक्ता
५५. आन्तराकाशरूपिणी
५६. आदित्य मण्डलगता
५७. आन्तरध्वान्तनाशिनी
५८. इन्दिरा
५९. इष्टदा
६०. इष्टा

६१. इन्दीवरि
६२. नभेक्षणा
६३. इरावती
६४. इन्द्रपदा
६५. इन्द्राणी इन्दुरूपिणी
६६. इक्षुकोदण्डसंयुक्ता
६७. इषुसंधानकारिणी
६८. इन्द्रनील समाकारा
६९. इडापिंगलरूपिणी
७०. इंद्राक्षी
७१. ईश्वरी
७२. ईहात्रय
७३. विवर्जिता
७४. उमा
७५. उडुनिभा

७६. उर्वारुकफलानना
७७. उडुप्रभा
७८. उडुमती
७९. उडुपा
८०. उडुमध्यगा
८१. ऊर्ध्वे
८२. ऊर्ध्वकेशी
८३. ऊर्ध्वाधोगतिभेदिनी
८४. ऊर्ध्वबाहुप्रिया
८५. ऊर्मिमाला
८६. वाग्ग्रन्थदायिनी
८७. ऋतुमत्ऋषि
८८. ऋतुमती
८९. ऋषिदेवनमस्कृता
९०. ऋग्वेदा

९१. ऋणहत्री
९२. ऋषिमण्डलचारिणी
९३. ऋद्धिदा
९४. ऋजुमार्गस्था
९५. ऋजुधर्मा
९६. ऋतुपदा
९७. ऋग्वेदनिलया
९८. ऋज्वी
९९. लुप्तधर्मवर्तिनी
१००. लूतारिवरसम्भूता
१०१. लूतादिविषहारिणी
१०२. एकाक्षरा
१०३. एकमात्रा
१०४. एका
१०५. एकनिष्ठा

१०६. ऐन्द्री
१०७. ऐरावतारूढा
१०८. ऐहिकामुष्मिकप्रदा
१०९. ओंकारा
११०. औषधी
१११. ओता
११२. ओतप्रोतनिवासिनी
११३. और्वा
११४. औषधसम्पन्ना
११५. औपासनफलप्रदा
११६. अण्डमध्यस्थितादेवी
११७. आकारमनुरूपिणी
११८. कात्यायनी
११९. कालरात्रि
१२०. कामाक्षी

१२१. कामसुन्दरी
१२२. कमला
१२३. कामिनी
१२४. कान्ता
१२५. कामदा
१२६. कालकण्ठिनी
१२७. करिकुम्भस्तनभरा
१२८. करवीर सुवासिनी
१२९. कल्याणी
१३०. कुण्डलवती
१३१. कुरुक्षेत्रनिवासिनी
१३२. कुरुविन्ददलाकारा
१३३. कुण्डली
१३४. कुमुदालया
१३५. कालजिह्वा

१३६. करालास्या
१३७. कालिका
१३८. कालरूपिणी
१३९. कमलनीयगुणा
१४०. कान्तिः
१४१. कलाधारा
१४२. कुमुद्वती
१४३. कौशिकी
१४४. कमलाकारा
१४५. कामचारप्रभञ्जिनी
१४६. कौमारी
१४७. करुणापांगी
१४८. ककुवन्ता
१४९. करिप्रिया
१५०. केसरी

१५१. केशवनुता
१५२. कदम्बकुसुमप्रिया
१५३. कालिन्दी
१५४. कालिका
१५५. कांची
१५६. कलशोद्भवसंस्तुता
१५७. काममाता
१५८. ऋतुमती
१५९. काम रूपा
१६०. कृपावती
१६१. कुमारी
१६२. कुण्डनिलया
१६३. किराती
१६४. कीरवाहना
१६५. कैकेयी

१६६. कोकिलालापा
१६७. केतकी
१६८. कुसुमप्रिया
१६९. कमण्डलुधरा
१७०. काली
१७१. कर्मनिर्मूलकारिणी
१७२. कलहसंगति
१७३. कक्षा
१७४. कृतकौतुकमंगला
१७५. कस्तूरीतिलका
१७६. करीन्द्र
१७७. गमना
१७८. कुहूः
१७९. कर्पूरलेपना
१८०. कृष्णा

१८१. कपिला
१८२. कुहराश्रया
१८३. कद्रूस्था
१८४. कुधरा
१८५. कम्रा
१८६. कुक्षिस्थाखिलविष्टपा
१८७. खंगखेटकरा
१८८. खर्वा
१८९. खेचरी
१९०. खगवाहना
१९१. खट्वांगधारिणी
१९२. ख्याता
१९३. खगराजोपरिस्थित:
१९४. खलघ्नी
१९५. खण्डितजरा

१९६. खण्डाख्यानप्रदायिनी
१९७. खण्डेन्दुतिलका
१९८. गंगा
१९९. गणेशगुहपूजिता
२००. गायत्री
२०१. गोमती
२०२. गीता
२०३. गान्धारी
२०४. गानलोलुपा
२०५. गौतमी
२०६. गामिनी
२०७. गाधा
२०८. गन्धर्वाप्सरसेविता
२०९. गोविन्दचरणाक्रान्ता
२१०. गुणत्रयविभाविता

२११. गन्धर्वी
२१२. गह्वरी
२१३. गोत्रा
२१४. गिरीशा
२१५. गहनागमी
२१६. गुहावासा
२१७. गुणवती
२१८. गुरुपाय
२१९. प्रणाशिनी
२२०. गुर्वी
२२१. गुणवती
२२२. गुह्या
२२३. गोप्तव्या
२२४. गुणदायिनी
२२५. गिरिजा

२२६. गुह्यमातंगी
२२७. गरुणध्वजबल्लभा
२२८. गर्वापहारिणी
२२९. गोदा
२३०. गोकुलस्था
२३१. गदाधरा
२३२. गोकर्णनिलयासक्ता
२३३. गुह्यमंडलवर्तिनी
२३४. घर्मदा
२३५. घनदा
२३६. घण्टा
२३७. घोरदानवमर्दिनी
२३८. घृणि मंत्रमयी
२३९. घोषा
२४०. धनसम्पत्तिदायिनी

२४१. घण्टारवप्रिया
२४२. घ्राणा
२४३. घृणिसंतुष्टकारिणी
२४४. घनारिमंडला
२४५. घूर्णा
२४६. घृताची
२४७. घनवेगिनी
२४८. ज्ञानधातुमयी
२४९. चर्चा
२५०. चर्चिता
२५१. चारुहासिनी
२५२. चटुला
२५३. चण्डिका
२५४. चित्रा
२५५. चित्रमाल्यविभूषिता

२५६. चर्तुभुजा
२५७. चारुदन्ता
२५८. चातुरी
२५९. चरितप्रदा
२६०. चूलिका
२६१. चित्रवस्त्रान्ता
२६२. चन्द्रम
२६३. कर्ण कुण्डला
२६४. चंद्रहासा
२६५. चारुदात्री
२६६. चकोरी
२६७. चन्द्रहासिनी
२६८. चन्द्रिका
२६९. चन्द्रधात्री
२७०. चौरा

२७१. चण्डिका
२७२. चञ्चद्वाग्वादिनी
२७३. चंद्रचूडा
२७४. चोरविनाशिनी
२७५. चारुचन्दन लिप्ताँगी
२७६. चञ्चच्चामरवीजिता
२७७. चारुमध्या
२७८. चारुगति:
२७९. चंदिला
२८०. चंद्ररूपिणी
२८१. चारुहोमप्रिया
२८२. चार्वाचरिता
२८३. चक्रबाहुका
२८४. चंद्रमंडलमध्यस्था
२८५. चन्द्रमंडलदर्पणा

२८६. चक्रवाकस्तनी
२८७. चेष्टा
२८८. चित्रा
२८९. चारुविलासिनी
२९०. चित्स्वरूपा
२९१. चंद्रवती
२९२. चन्द्रमा
२९३. चन्दनप्रिया
२९४. चोदयित्री
२९५. चिरप्रज्ञा
२९६. चातका
२९७. चारुहेतुकी
२९८. छत्रयाता
२९९. छत्रधरा
३००. छाया

३०१. छन्दः
३०२. परिच्छदा
३०३. छायादेवी
३०४. छिद्रनखा
३०५. छन्नेद्रियविसर्पिणी
३०६. छन्दोऽनुष्टुप्प्रतिष्ठान्ता
३०७. छिद्रोपद्रवभेदिनी
३०८. छेदा
३०९. छत्रेश्वरी
३१०. छुरिका
३११. छेदनप्रिया
३१२. जननी
३१३. जन्मरहिता
३१४. जातवेदाः
३१५. जगन्मयी

३१६. जान्ह्वी
३१७. जटिला
३१८. जेत्री
३१९. जरामरणवर्जिता
३२०. जम्बू द्वीपवती
३२१. ज्वाला
३२२. जयन्ती
३२३. जलशालिनी
३२४. जितेन्द्रिया
३२५. जितक्रोधा
३२६. जितामित्रा
३२७. जगत्प्रिया
३२८. जातरूपमयी
३२९. जिह्वा
३३०. जानकी

३३१. जगती
३३२. जरा
३३३. जनित्री
३३४. जन्हुतनया
३३५. जगत्त्रयहितैषिणी
३३६. ज्वालामुखी
३३७. जपवती
३३८. ज्वरह्नी
३३९. जितविष्टपा
३४०. जिताक्रान्तमयी
३४१. ज्वाला
३४२. जाग्रती
३४३. ज्वरदेवता
३४४. ज्वलन्ती
३४५. जलदा

३४६. ज्येष्ठा
३४७. ज्याघोषास्फोटदिङ्मुखी
३४८. जम्भिनी
३४९. जृम्भणा
३५०. जृम्भा
३५१. ज्वलन्माणिक्यकुण्डला
३५२. झिंझिका
३५३. झणनिर्घोषा
३५४. झंझामारुतवेगिनी
३५५. झल्लरीवाद्यकुशला
३५६. अरूपा
३५७. अभुजा
३५८. टंकवाणसमायुक्ता
३५९. टंकिनी
३६०. टंकभेदिनी

३६१. टंकीगणकृताघोषा
३६२. टंकनीयमहोरसा
३६३. टंकारकारिणीदेवी
३६४. ठठशब्दनिनादिनी
३६५. डामरी
३६६. डाकिनी
३६७. डिम्भा
३६८. डुण्डुमारैकनिर्जिता
३६९. डामरीतन्त्र-मार्गास्था
३७०. डमड्डमरुनादिनी
३७१. डिण्डीरवसहा
३७२. डिम्भलसत्क्रीडापरायण
३७३. ढुण्ढिविघ्नेशजननी
३७४. ढक्काहस्ता
३७५. ढिढिव्रजा

३७६. नित्यज्ञाना
३७७. निरुपमा
३७८. निर्गुणा
३७९. नर्मदा
३८०. नदी
३८१. त्रिगुणा
३८२. त्रिपदा
३८३. तंत्री
३८४. तुलसी- तरुणातरुः
३८५. त्रिविक्रमपदाक्रान्ता
३८६. तुरीयपद्- गामिनी
३८७. तरुणादित्यसंकाशा
३८८. तामसी
३८९. तुहिना
३९०. तुरा

३११. त्रिकालज्ञानसम्पन्ना
३१२. त्रिवेणी
३१३. त्रिलोचना
३१४. त्रिशक्तिः
३१५. त्रिपुरा
३१६. तुंगा
३१७. तुरंगवदना
३१८. तिमिंगिलगिला
३१९. तीव्रा
४००. त्रिस्रोता
४०१. तामसादिनी
४०२. तंत्रमंत्रविशेषज्ञा
४०३. तनुमध्या
४०४. त्रिविष्टपा
४०५. त्रिसंध्या

४०६. त्रित्नी
४०७. तोषासंस्था
४०८. तालप्रतापिनी
४०९. ताटंकिनी
४१०. तुषाराभा
४११. तुहिनाचलवासिनी
४१२. तन्तुजालसमायुक्ता
४१३. तारहारावलिप्रिया
४१४. धतिलहोमप्रिया
४१५. तीर्था
४१६. तमालकुसुमाकृति
४१७. तारका
४१८. त्रियुता
४१९. तन्वी
४२०. त्रिशंकुपरिवारिता

४२१. तलोदरी
४२२. तिलाभूषा
४२३. ताटंकप्रियवाहिनी
४२४. त्रिजटा
४२५. तित्तिरी
४२६. तृष्णा
४२७. त्रिविधा तरुणाकृति
४२८. तप्तकांचन
४२९. संकाशा
४३०. तप्तकांचनभूषणा
४३१. त्रैयम्बका
४३२. त्रिवर्गा
४३३. त्रिकालज्ञानदायनी
४३४. तर्पणा
४३५. तृप्तिदा

४३६. तृप्ता
४३७. तामसी
४३८. तुम्बुरुस्तुता
४३९. तार्क्ष्यस्था
४४०. त्रिगुणाकारा
४४१. त्रिभंगी
४४२. तनुवल्लरि
४४३. थात्कारी
४४४. थारवा
४४५. थान्ता
४४६. दोहिनी
४४७. दीनवत्सला
४४८. दानवान्तकरी
४४९. दुर्गा
४५०. दुर्गासुरनिवर्हिणी

४५१. देवरीतिः
४५२. दिवारात्रिः
४५३. द्रोपदी
४५४. दुंदुभिस्वना
४५५. देवयानी
४५६. दुरावासा
४५७. दरिद्रयोद्‍भेदिनी
४५८. दिवा
४५९. दामोदरप्रिया
४६०. दीप्ता
४६१. दिग्वासा
४६२. दिग्विमोहिनी
४६३. दण्डकारण्यनिलया
४६४. दण्डिनी
४६५. देवपूजिता

४६६. देववन्द्या
४६७. दिविषदा
४६८. द्वेषिणी
४६९. दानवाकृतिः
४७०. दीनानाथस्तुता
४७१. दीक्षा
४७२. दैवतादिस्वरूपिणी
४७३. धात्री
४७४. धनुर्धरा
४७५. धेनुः
४७६. धारिणी
४७७. धर्मचारिणी
४७८. धरंधरा
४७९. धराधारा
४८०. धनदा

४८१. धान्यदोहिनी
४८२. धर्मशीला
४८३. धनाध्यक्षा
४८४. धनुर्वेदविशारदा
४८५. धृति
४८६. धन्या
४८७. धृतपदा
४८८. धर्मराजप्रिया
४८९. ध्रुवा
४९०. धूमावती
४९१. धूमकेशीधर्मशास्त्र
४९२. प्रकाशिनी
४९३. नंदा
४९४. नंदप्रिया
४९५. निद्रा

४९६. नृनुता
४९७. नन्दनामित्मका
४९८. नर्मदा
४९९. नलिनी
५००. नीला
५०१. नीलकण्ठसमाश्रया
५०२. नारायणप्रिया
५०३. नित्या
५०४. निर्मला
५०५. निर्गुणा
५०६. निधि:
५०७. निराधारा
५०८. निरुपमा
५०९. नित्यशुद्धा
५१०. निरंजना

५११. नादबिन्दुकलातीता
५१२. नादबिन्दुकलात्मिका
५१३. नृसिंहनी
५१४. नग धरा
५१५. नृपनागविभूषिता
५१६. नरकक्लेशशमनी
५१७. नारायणपदोद्भवा
५१८. निरवद्या
५१९. निराकारा
५२०. नारदप्रियकारिणी
५२१. नानाज्योतिसमाख्याता
५२२. निधिदा
५२३. निर्मलात्मिका
५२४. नव सूत्रधरा
५२५. भनीतिः

५२६. निरुपद्रवकारिणी
५२७. नन्दजा
५२८. नवरत्नाढ्या
५२९. नैमिषारण्यवासिनी
५३०. नवनीतप्रिया
५३१. नारी
५३२. नीलजीमूतनिस्वना
५३३. निमेषिणी
५३४. नदीरूपा
५३५. नीलग्रीवा
५३६. निशीश्वरी
५३७. नामावलिः
५३८. निशुम्भघ्नी
५३९. नागलोकनिवासिनी
५४०. नवजाम्बूनदप्रख्या

५४१. नागलोकाधिदेवता
५४२. नूपुराक्रान्तचरणा
५४३. नरचित्तप्रमोदनी
५४४. निमग्नारक्तनयना
५४५. निर्घातसमनिस्वा
५४६. नन्दनोद्यानिलया
५४७. निर्बूहोपरिचारिणी
५४८. पार्वती
५४९. परमोदारा
५५०. परब्रह्मात्मिका
५५१. परा
५५२. पञ्चकोशविनिर्मुक्ता
५५३. पञ्चपातकनाशिनी
५५४. परचित्तविधानज्ञा
५५५. पंचिका

५५६. पंचरूपिणी
५५७. पूर्णिमा
५५८. परमा
५५९. प्रीतिः
५६०. परतेज
५६१. प्रकाशिनी
५६२. पुराणी
५६३. पौरुषी
५६४. पुण्या
५६५. पुण्डरी कनिभेक्षणा
५६६. पाताल
५६७. तलनिर्मग्ना
५६८. प्रीतिविवर्धिनी
५६९. पावनी
५७०. पादसहिता

५७१. पेशला
५७२. पवनाशिनी
५७३. प्रजापतिः
५७४. परिश्रान्ता
५७५. पर्वतस्तनमण्डला
५७६. पद्मप्रिया
५७७. पद्मसंस्था
५७८. पद्माक्षी
५७९. पद्मसम्भवा
५८०. पद्मपत्रा
५८१. पद्मपदा
५८२. पद्मिनी
५८३. प्रियभाषिणी
५८४. पशुपाशविनिर्मुक्ता
५८५. पुरन्ध्री

५८६. पुरवासिनी
५८७. पुष्कला
५८८. पुरुषा
५८९. पर्वा
५९०. पारिजातसुमप्रिया
५९१. पतिव्रता
५९२. पवित्रांगी
५९३. पुष्पहासपरायणा
५९४. प्रज्ञातीसुता
५९५. पौत्री
५९६. पुत्रपूज्या
५९७. पयस्विनी
५९८. पट्टिपाशधरा
५९९. पंक्तिः
६००. पितृलोक

६०१. परदायिनी
६०२. पुण्यशीला
६०३. प्रणतार्तिविनाशिनी
६०४. प्रद्युम्नजननी
६०५. पुष्टा
६०६. पितामहपरिग्रहा
६०७. पुण्डरीकपुरावासा
६०८. पुण्डेरीकसमानना
६०९. पृथुजंघा
६१०. पृथुभुजा
६११. प्रथुपादा
६१२. पृथूदरी
६१३. प्रवालशोभा
६१४. पिंगाक्षी
६१५. पीतवासाः

६१६. प्रचापला
६१७. प्रसवा
६१८. पुष्टिदा
६१९. पुण्या
६२०. प्रतिष्ठा
६२१. प्रणवागतिः
६२२. पंचवर्णा
६२३. पंचवाणी
६२४. पंचिका
६२५. पंजरस्थिता
६२६. परमाया
६२७. परज्योतिः
६२८. परप्रीतः
६२९. परागतिः
६३०. पराकाष्ठा

६३१. परेशानी
६३२. पाविनी
६३३. पावकद्युतिः
६३४. पुण्यभद्रा
६३५. परिच्छेद्या
६३६. पुष्पहासा
६३७. पृथूदरी
६३८. पीतांगी
६३९. पीतवसना
६४०. पीतशय्या
६४१. पिशाचिनी
६४२. पीतक्रिया
६४३. पिशाचघ्नी
६४४. पाटलाक्षी
६४५. पटुक्रिया

६४६. पंचभक्षप्रियाचारा
६४७. पूतनाप्राणघातिनी
६४८. पुन्नागवनमध्यस्था
६४९. पुण्यतीर्थनिषेविता
६५०. पंचागी
६५१. पराशक्तिः
६५२. परम हंलादकारिणी
६५३. पुष्पकाण्डस्थिता
६५४. पूषा
६५५. पोषिताखिलविष्टपा
६५६. पानप्रिया
६५७. पंचशिखा
६५८. पन्नगोपरिशायिनी
६५९. पंचमात्रात्मिका
६६०. पृथ्वी

६६१. पथिका
६६२. पृथुदोहिनी
६६३. पुराणन्यायमीमांसा
६६४. पाटली
६६५. पुष्पगन्धिनी
६६६. पुण्यप्रजा
६६७. पारदात्री
६६८. परमार्गैकगोचरा
६६९. प्रबालशोभा
६७०. पूर्णाशा
६७१. प्रणवा
६७२. पल्लवोदरी
६७३. फलिनी
६७४. फलदा
६७५. फल्गुः

६७६. फूत्कारीं
६७७. फलकाकृतिः
६७८. फणीन्द्रभोगशयना
६७९. फणिमण्डलमण्डिता
६८०. बालवाला
६८१. बहुमता
६८२. बालातपनिभांशुका
६८३. बलभद्रप्रिया
६८४. वन्द्या
६८५. बडवा
६८६. बुद्धिसंस्तुता
६८७. बन्दीदेवी
६८८. बिलवती
६८९. बडिषघ्नी
६९०. बलिप्रिया

६९१. बान्धवी
६९२. बोधिता
६९३. बुद्धिः
६९४. बन्धूककुसुमप्रिया
६९५. बालभानुप्रभाकारा
६९६. ब्राह्मी
६९७. ब्राह्मणदेवता
६९८. वृहस्पतिस्तुता
६९९. वृन्दा
७००. वृन्दावनविहारिणी
७०१. बालाकिनी
७०२. बिलाहारा
७०३. बिलयासा
७०४. बहूदका
७०५. बहूनेत्रा

७०६. बहुपदा
७०७. बहुकर्णावतंसिका
७०८. बहुबाहुयुता
७०९. बीजरूपिणी
७१०. बहुरूपिणी
७११. बिन्दुनादकलातीता
७१२. बिन्दुनादस्वरूपिणी
७१३. बद्धगोधांगुलित्राणा
७१४. बदर्याश्रमवासिनी
७१५. बृन्दारका
७१६. बृहत्स्कन्धा
७१७. बृहती
७१८. बाणपातिनी
७१९. वृन्दाध्यक्षा
७२०. बहुनुता

७२१. वनिता
७२२. बहुविक्रमा
७२३. बद्धपद्मासनासीता
७२४. बिल्वपत्रनलस्थिता
७२५. बोधिद्रुमनिजावासा
७२६. बडिस्था (बलिस्था)
७२७. बिन्दुदर्पणा
७२८. बाला
७२९. बाणासनवती
७३०. बडवानलवेगिनी
७३१. ब्रह्मांडवहिरन्तःस्था
७३२. ब्रह्मकंकणसूत्रिणी
७३३. भवानी
७३४. भयहारिणी
७३५. भद्रकाली

७३६. भुजंगाक्षी
७३७. भारती
७३८. मलया
७३९. विक्रमा
७४०. भारताशया
७४१. भैरवी
७४२. भीषणाकारा
७४३. भूतिदा
७४४. भतिमालिनी
७४५. भामिनी
७४६. भोगनिरता
७४७. भद्रदा
७४८. भूरिविक्रमा
७४९. भूतवासा
७५०. भृगुलता

७५१. भार्गवी
७५२. भूसरार्चिता
७५३. भागीरथी
७५४. भोगवती
७५५. भवनस्था
७५६. भिषग्वरा
७५७. भामिनी
७५८. भोगिनी
७५९. भाषा
७६०. भवानी
७६१. भूरिदक्षिणा
७६२. भर्गात्मिका
७६३. भीमवती
७६४. भवबन्धविमोचिनी
७६५. भजनीया

७६६. भूतधात्रीरंजिता
७६७. भुवनेश्वरी
७६८. भुजंगवलया
७६९. भीमा
७७०. भेरूण्डा
७७१. भागधेयिनी
७७२. माता
७७३. माया
७७४. मधुमती
७७५. मधुजिह्वा
७७६. मधुप्रिया
७७७. महादेवी
७७८. महाभागा
७७९. मालिनी
७८०. मीनलोचना

७८१. मायातीता
७८२. मधुमती
७८३. मधुमांसा
७८४. मधुद्रवा
७८५. मानयी
७८६. मधुसम्भूता
७८७. मिथिलापुरवासिनी
७८८. मधुकैटभसंहर्त्रीं
७८९. मेदिनी
७९०. मेघमालिनी
७९१. मन्दोदरी
७९२. महामाया
७९३. मैथली
७९४. मसृणप्रिया
७९५. महालक्ष्मीः

७१६. महाकाली
७१७. महाकन्या
७१८. महेश्वरी
७१९. माहेन्द्री
८००. मेरुतनया
८०१. मन्दारकुसुमार्चिता
८०२. मंजुमंजीर
८०३. चरणा
८०४. मोक्षदा
८०५. मंजुभाषिणी
८०६. मधुरद्राविणी
८०७. मुद्रा
८०८. मलवान्विता
८०९. मेधा
८१०. मरकतश्यामा

८११. मागधी
८१२. मेनकात्मजा
८१३. महामीरा
८१४. महावीरा
८१५. महाश्यामा
८१६. मनुस्तुता
८१७. मातृका
८१८. मिहिरामाषा
८१९. मुकुन्दपद
८२०. मूलाधारस्थिता
८२१. मुग्धा
८२२. मणिपूरकवासिनी
८२३. मृगाक्षी
८२४. महिषारूढा
८२५. महिषासुरमर्दिनी

८२६. योगासना
८२७. योगगम्या
८२८. योगा
८२९. यौवनकाश्रया
८३०. यौवनी
८३१. युद्धमध्यस्था
८३२. यमुना
८३३. युगाधारिणी
८३४. यक्षिणी
८३५. योगयुक्ता
८३६. यक्षराजप्रसूतिनी
८३७. यात्रा
८३८. यानविधानज्ञा
८३९. यदुवंशसमुद्भवा
८४०. यकारादिहकारान्ता

८४१. याजुषी
८४२. यज्ञरूपिणी
८४३. यामिनी
८४४. योगनिरता
८४५. यातुधानभयंकरी
८४६. रुक्मिणी
८४७. रमणी
८४८. रामा
८४९. रेवती
८५०. रेणुका
८५१. रतिः
८५२. रौद्री
८५३. रौद्रप्रियाकारा
८५४. राममाता
८५५ रतिप्रिया

८५६. रोहिणी
८५७. राज्यदा
८५८. रेवा
८५९. दमा
८६०. राजीवलोचना
८६१. राकेशी
८६२. रूपसम्पन्ना
८६३. रत्नसिंहासनस्थिता
८६४. रत्नमाल्याम्बरधरा
८६५. रक्तगन्धानुलेपना
८६६. राजहंससमारूढा
८६७. रम्भा
८६८. रक्तबलिप्रिया
८६९. रमणीययुगाधारा
८७०. राजिताखिलभूतला

८७१. रुरुचर्मैपरीधाना
८७२. रथिनी
८७३. रत्नमालिका
८७४. रोगेशी
८७५. रोगशमनी
८७६. राविणी
८७७. रोमहर्षिणी
८७८. रामचन्द्रपदाक्रान्ता
८७९. रावणच्छेदकारिणी
८८०. रत्नवस्त्रपरिच्छन्ना
८८१. रथस्था
८८२. रुक्मभूषणा
८८३. लज्जाधिदेवता
८८४. लोला
८८५. ललिता

८८६. लिङ्गधारिणी
८८७. लक्ष्मीः
८८८. लोला
८८९. लुप्तविषा
८९०. लोकिनी
८९१. लोकविश्रुता
८९२. लज्जा
८९३. लम्बोदरी
८९४. ललना
८९५. लोकधारिणी
८९६. वरदा
८९७. वन्दिता
८९८. विद्या
८९९. वैष्णवी
९००. विमलाकृतिः

१०१. वाराही
१०२. विरजा
१०३. वर्षा
१०४. वरलक्ष्मीः
१०५. विलासिनीविनता
१०६. व्योममध्यस्था
१०७. वारिजासान
१०८. संस्थिता
१०९. वारुणी
११०. वेणुसम्भूता
१११. वीतिहोत्रा
११२. विरूपिणी
११३. वायुमण्डलामध्यस्था
११४. विष्णुरूपा
११५. विधिप्रिया

११६. विष्णुपत्नी
११७. विष्णुमती
११८. विशालाक्षी
११९. वसुन्धरा
१२०. वामदेवप्रिया
१२१. बेला
१२२. वज्रिणी
१२३. वसुदोहिनी
१२४. वेदाक्षरपरीताँगी
१२५. वाजपेयफलप्रदा
१२६. वासवी
१२७. वामजननी
१२८. बैकुण्ठनिलया
१२९. वरा
१३०. व्यासप्रिया

१३१. वर्मधरा
१३२. वाल्मीकिपरिसेविता
१३३. शाकम्भरी
१३४. शिवा
१३५. शान्ता
१३६. शारदा
१३७. शरणागतिः
१३८. शातोदरी
१३९. शुभाचारा
१४०. शुम्भासुरविमर्दिनी
१४१. शोभावती
१४२. शिवाकारा
१४३. शंकरार्द्धशरीरिणी
१४४. शोणी
१४५. शुभाशया

१४६. शुभ्रा
१४७. शिरःसंधानकारिणी
१४८. शरावती
१४९. शरानन्दा
१५०. शरज्जयोत्स्ना
१५१. शुभानता
१५२. शरभा
१५३. शूलिनी
१५४. शुद्धा
१५५. शबरी
१५६. शुकवाहना
१५७. श्रीमती
१५८. श्रीधरनन्दा
१५९. श्रवणानन्ददायिनी
१६०. शर्वाणी

१६१. शर्वरीवन्द्या
१६२. षड्भाषाषड्ऋतुप्रिया
१६३. षडाधारस्थितादेवी
१६४. षण्मुखप्रियकारिणी
१६५. षडंगरूपसुमति
१६६. सुरासुरनमस्कृता
१६७. सरस्वती
१६८. सदाधारा
१६९. सर्वमंगलकारिणी
१७०. सामगानप्रिया
१७१. सूक्ष्मा
१७२. सावित्री
१७३. सामसम्भवा
१७४. सर्वावासा
१७५. सदानन्दा

१७६. सुस्तनी
१७७. सागराम्बरा
१७८. सर्वैश्वर्यप्रिया
१७९. सिद्धिः
१८०. साधुबन्धुपराक्रमा
१८१. सप्तर्षिमण्डलगता
१८२. सोममंडलवासिनी
१८३. सर्वज्ञा
१८४. सान्द्रकरुणा
१८५. समानाधिकवर्जिता
१८६. सर्वोत्तुंगा
१८७. संगहीना
१८८. सद्गुणा
१८९. सकलेष्टदा
१९०. सरघा

९९१. सूर्यतनया
९९२. सुकेशी
९९३. सोमसंहतिः
९९४. हिरण्यवर्णा
९९५. हारिणी
९९६. ह्रींकारी
९९७. हंसवाहिनी
९९८. क्षौमवस्त्रपरीतांगी
९९९. क्षीराब्धितनया
१०००. क्षमा
१००१. गायत्रीं
१००२. सावित्री
१००३. पार्वती
१००४. सरस्वती
१००५. वेदगर्भा

१००६. वरारोहा
१००७. श्रीगायत्री
१००८. पराम्बिका

हे माँ! आप ही सब जीवों का आश्रय हैं और आप ही सब प्राणियों का प्राण, बुद्धि, शोभा, प्रभा, क्षमा, शान्ति, श्रद्धा, विद्या, धृति और स्मृति हैं अर्थात् ये सारे गुण आपकी ही विभूति हैं—

आपको मेरा कोटि-कोटि प्रणाम।

कोटि-कोटि प्रणाम।

गायत्री चालीसा

दोहा

ह्रीं, श्री क्लीं, मेघा, प्रभा जीवन ज्योति प्रचण्ड।
शांति क्रांति, जागृति, प्रगति, रचना शक्ति अखण्ड।।
जगत जननि, मंगल करनि, गायत्री सुख धाम।
प्रणवों सावित्री, स्वधा, स्वाहा पूरन काम।।

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी।
गायत्री नित कलिमल दहनी।।
अक्षर चौबीस परम पुनीता।
इनमें बसें शास्त्र श्रुति गीता।।
शाश्वत सतोगुणी सतरूपा।
सत्य सनातन सुधा अनूपा।।
हंसारूढ़ श्वेताम्बर धारी।
स्वर्ण क्रांति शुचि गगन बिहारी।।
पुस्तक पुष्प कमण्डल माला।
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला।।
ध्यान धरत पुलकित हिय होई।
सुख उपजत, दुःख दुरमति खोई।।
कामधेनु तुम सुर तरु छाया।
निराकार की अद्भुत माया।।
तुम्हरी शरण गहै जो कोई।
तरै सकल संकट सों सोई।।

सरस्वती लक्ष्मी तुम काली।
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली॥
तुम्हरी महिमा पार न पावैं।
जो शारद शतमुख गुण गावैं॥
चार वेद की मातु पुनीता।
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता॥
महामंत्र जितने जग माहीं।
कोऊ गायत्री सम नाहीं॥
सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै।
आलस पाप अविद्या नासै॥
सृष्टि बीज जग जननि भवानी।
कालरात्रि वरदा कल्याणी॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते।
तुम सों पावें सुरता तेते॥
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे।
जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे॥
महिमा अपरम्पार तुम्हारी।
जय जय जय त्रिपदा भय हारी॥
पूरित सकल ज्ञान विज्ञान।
तुम सम अधिक न जग में आना॥
तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा।
तुमहिं पाय कछु रहै न क्लेशा॥

जानत तुमहिं तुमहिं ह्वै जाई।
पारस परसि कुधातु सुहाई॥
तुम्हारी शक्ति दिपै सब ठाई।
माता तुम सब ठौर समाई॥
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे।
सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे॥
सकल सृष्टि की प्राण विधाता।
पालक, पोषक, नाशक, त्राता॥
मातेश्वरी दया व्रत धारी।
तुम सन तेरे पातकी भारी॥
जापर कृपा तुम्हारी होई।
तापर कृपा करें सब कोई॥
मंद बुद्धि ते बुद्धि बल पावें।
रोगी रोग रहित ह्वै जावें॥
दारिद मिटै कटै सब पीरा।
नाशै दुःख हरै भव भीरा॥
गृह क्लेश चित चिन्ता भारी।
नासै गायत्री भय हारी॥
सन्तति हीन सुसन्तति पावें।
सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें॥
भूत पिशाच सबै भय खावें।
यक के दूत निकट नहिं आवें॥

जो सधवा सुमिरे चित लाई।
अछत सुहाग सदा सुखदाई॥
घर वर सुख प्रद लहैं कुमारी।
विधवा रहें सत्य व्रत धारी॥
जयति जयति जगदम्ब भवानी।
तुम सम और दयालु न दानी॥
जो सद्‌गुरु सों दीक्षा पावें।
सो साधन को सफल बनावें॥
सुमिरन करें सुरुचि बड़भागी।
लहैं मनोरथ गृही विरागी॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता।
सब समर्थ गायत्री माता॥
ऋषि, मुनि, यती, तपस्वी, योगी।
आरत, अर्थी, चिन्तन भोगी॥
जो जो शरण तुम्हारी आवैं।
सो सो मन वंछित फल पावैं॥
बल, बुद्धि, विद्या, शील स्वभाऊ।
धन, वैभव, यश, तेज उछाऊ॥
सकल बढें उपजे सुख नाना।
जो यह पाठ करै धरि ध्याना॥

यह चालीसा भक्ति युत, पाठ करै जो कोय, तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय।

गायत्री स्तवन

यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालम्, रत्नप्रमं तीव्रमनादिरूपम्।
दारिद्रय दुःखक्षयकारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्। १।

शुभ ज्योति के पुञ्ज अनादि, अनुपम।
ब्रह्माण्ड व्यापी आलोक कर्त्ता।।
दारिद्रय, दुःख भय से मुक्त कर दो।
पावन बना दो हे देव सविता।।

यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितम्, विप्रैः स्तुतं मानवमुक्तिकोविदम्।
तं देवदेवं प्रणमामि भर्ग, पुनातु मां तत्सवितुरेण्यम्। २।

ऋषि देवताओं से नित्य पूजित।
हे भर्ग! भव बन्धन-मुक्ति कर्त्ता।।
स्वीकार करलो वंदन हमारा। पावन०।।

यन्मण्डलं ज्ञानघनत्वगम्यं, त्रैलोक्य पूज्यं त्रिगुणात्मरूपम्।
समस्ततेजोमय दिव्यरूपं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्। ३।

हे ज्ञान के धन, त्रैलोक्य पूजित।
पावन गुणों के विस्तार कर्त्ता।
समस्त प्रतिभा के आदि कारण। पावन०।।

यन्मण्डलं गूढ़मति प्रबोधम्, धर्मस्य बृद्धि कुरुते जनानाम् ।
यत् सर्वपापक्षयकारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् । ४

हे गूढ़ अन्तःकरण में विराजित ।
तुम दोष-पापादि संहार कर्त्ता ।
शुभ धर्म का बोध हमको करादो । पावन० ।।

यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षम्, यदृग् यजुः सामसु सम्प्रगीतम् ।
प्रकाशितं ये न च भूर्भुवः स्वः, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् । ५ ।

हे व्याधि नाशक, हे पुष्टि दाता ।
ऋग, साम, यजु वेद संचार कर्त्ता ।।
हे भूभुर्वः स्वः मैं स्व प्रकाशित । पावन० ।।

यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति, गायन्ति यच्चारणासिद्धसंघाः ।
यद्योगिनो यंगजुषां च संघाः पुनातु तां तत्सवितुर्वरेण्यम् । ६ ।

सब वेदविद चारण, सिद्ध योगी ।
जिसके सदा से है गान कर्त्ता ।।
हे सिद्ध सतें के लक्ष्य शाश्वत । पावन० ।।

यन्मण्डलं सर्वजनेषु पूजितं, ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके ।
यत्काल कालादिमनादिरूपम्, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् । ७ ।

हे विश्व मानव से आदि पूजित ।

नश्वर जगत में शुभ ज्योति कर्त्ता ।।

हे काल के काल-अनादि ईश्वर । पावन० ।।

यन्मण्डलं विष्णुचतुर्मुखास्यं, यदक्षरं पापहरं जनानाम्।
यत्कालकल्पक्षयकारणं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् । ८ ।

हे विष्णु ब्रह्मादि द्वारा प्रचारित ।
हे भक्त पालक हे पाप हर्त्ता ।।
हे काल-कल्पादि के आदि स्वामी । पावन० ।।

यन्मण्डलं विश्वसृजं प्रसिद्धम्, उत्पत्तिरक्षाप्रलयप्रगल्भम्।
यस्मिन् जगत संहरतेऽखिलं च, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् । ९ ।

हे विश्व मण्डल के आदि कारण ।
उत्पत्ति-पालन— संहारे कर्त्ता ।।
होता तुही मे.लय यह जगत सब । पावन० ।।

यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोः, आत्मा परंधाम विशुद्धतत्वम्।
सूक्ष्मान्तरैयोगपथानुगम्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् । १० ।

हे सर्वव्यापी, प्रेरक नियन्ता ।
विशुद्ध आत्मा, कल्याण कर्त्ता ।।
शुभ योग पथ पर हमको चलाओ । पावन० ।।

यन्मण्डलं ब्रह्माविदो वदन्ति, गायन्ति यच्चरणासिद्धसंघाः ।
यन्मडलं वेदविदः स्मरन्ति, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् । ११ ।

हे ब्रह्मानिष्ठों से आदि पूजित ।
वेदज्ञ जिसके गुणगान कर्त्ता ।।
सद्भावना हम सब में जगा दो । पावन० ।।

यन्मण्डलं वेदविदोपगीतं, यद्योगिनां योगपथानुगम्यम् ।
तत्सर्ववेदं प्रणमामि दिव्यं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् । १२ ।

हे योगियों के शुभ मार्ग दर्शक !
सद्ज्ञान के आदि संचार कर्त्ता ।।
प्रणिपात स्वीकार लो हम सभी का । पावन० ।।

****

चालीस गायत्री पाठ संग्रह

१. राम गायत्री

ॐ दशरथ नन्दनाय विद्महे सीता वल्लभाय।
धीम हि तन्नो राम प्रचोदयात्।

२. सीता गायत्री

ॐ जनक नन्दन्यै विद्महे भूमिजायै।
धीम हि तन्नो सीता प्रचोदयात्।

३. लक्ष्मण गायत्री

ॐ दशरथ नन्दनायवि हे ऊर्मिलाप्रियाय।
धीम हि तन्नो लक्ष्मण प्रचोदयात्।

४ हनुमान गायत्री

ॐ अञ्जनी गर्भाय विद्महे वायु पुत्राय।
धीम हि तन्नो हनुमत प्रचोदयात्।

५. कृष्ण गायत्री

ॐ देवकी नन्दनाय विद्महे वासुदेवाय।
धीम हि तन्नो कृष्ण प्रचोदयात्।

६. राधा गायत्री

ॐ वृषभानुजाय विद्महे कृष्ण प्रियाय।
धीम हि तन्नो राधिका प्रचोदयात्।

७. ब्रह्म गायत्री

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्य भर्गोदेवस्य।
धीम हि धियो योनः प्रचोदयात्।

८. विष्णु गायत्री

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय।
धीम हि तन्नो विष्णु प्रचोदयात्।

९. लक्ष्मी गायत्री

ॐ महालक्ष्मी विद्महे विष्णु प्रियाय।
धीम हि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।

१०. रूद्र गायत्री

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय।
धीम हि तन्नो रूद्र प्रचोदयात्।

११. गिरिजा गायत्री

ॐ गिरिजायै विद्महे शिव प्रियाय।
धीम हि तन्नो पार्वती प्रचोदयात्।

१२. गोपाल गायत्री

ॐ गोपालाय विद्महे गोपीजन वल्लभाय।
धीम हि तन्नो गोपाल प्रचोदयात्।

१३. गरुड़ गायत्री

ॐ विष्णुदूताय विद्महे स्वर्ण पक्षाय।
धीमहि तन्नो गरुड़ प्रचोदयात्।

१४. नृसिंह गायत्री

ॐ नृसिंह रूपाय विद्महे वज्र नखाय।
धीमहि तन्नो नृसिंह प्रचोदयात्।

१५. दुर्गा गायत्री

ॐ नव दुर्गाय विद्महे सिंहारूढाय।
धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।

१६. सरस्वती गायत्री

ॐ सरस्वत्यै विद्महे ब्रह्म पुत्रियै।
धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।

१७. तुलसी गायत्री

ॐ तुलस्यै विद्महे विष्णु प्रियाय।
धीमहि तन्नो वृन्दा प्रचोदयात्।

१८. अग्नि गायत्री

ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्नि देवाय।
धीमहि तन्नो अग्नि प्रचोदयात्।

१९. रामदेव गायत्री

ॐ अजमल नन्दनाय विद्महे सायर सुताय।
धीम हि तन्नो रामदेवाय प्रचोदयात्।

२०. गुरुदेव गायत्री

ॐ ब्रह्मरूपाय विद्महे महा ज्ञानाय।
धीम हि तन्नो सतगुरु प्रचोदयात्।

२१. हंस गायत्री

ॐ परम हंसाय विद्महे महा हंसाय।
धीम हि तन्नो सत हंस प्रचोदयात्।

२२. अश्विनी गायत्री

ॐ वाणीश्वराय विद्महे हय ग्रीवाय।
धीम हि तन्नो अश्विनीकुमार प्रचोदयात्।

२३. गणेश गायत्री

ॐ एक दन्ताय विद्महे वक्र तुण्डाय।
धीम हि तन्नो गणपति प्रचोदयात्।

२४. सूर्य गायत्री

ॐ भास्कराय विद्महे कश्यपाय (दिवाकराय)।
धीम हि तन्नो सूर्य प्रचोदयात्।

२५. नारायण गायत्री

ॐ नारायण विद्महे शेषशायिने।
धीम हि तन्नो नारायण प्रचोदयात्।

२६. देवी गायत्री

ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै विद्महे महाशक्तयं।
धीम हि तन्नो महादेवी प्रचोदयात्।

२७. गोपाल गायत्री

ॐ गोपीजन वल्लभाय विद्महे वासुदेवाय।
धीम हि तन्नो गोपाल प्रचोदयात्।

२८. परशुराम गायत्री

ॐ यामदग्न्याय विद्महे महावीराय।
धीम हि तन्नो परशुराम प्रचोदयात्।

२९. वृन्दा गायत्री

ॐ तुलसी पत्राय विद्महे महालक्ष्म्यै।
धीम हि तन्नो वृन्दारण्य प्रचोदयात्।

३०. सतगुरु गायत्री

ॐ परब्रह्मणे विद्महे परमात्मने।
धीम हि तन्नो सतगुरु प्रचोदयात्।

३१. हंस गायत्री

ॐ परम रूपाय विद्महे महतत्वाय ।
धीम हि तन्नो हंस प्रचोदयात् ।

३२. वायु गायत्री

ॐ पवन देवाय विद्महे पञ्चमुखाय ।
धीम हि तन्नो गोपाल प्रचोदयात् ।

३३. विश्वकर्मा गायत्री

ॐ विश्वात्मने विद्महे विश्व रूपाय ।
धीम हि तन्नो त्वष्ठः प्रचोदयात् ।

३४. शेष गायत्री

ॐ दाशरथये विद्महे अलबेलाय ।
धीम हि तन्नो शेषरूप प्रचोदयात् ।

३५. आकाश गायत्री

ॐ आकाशाय विद्महे नभो देवाय ।
धीम हि तन्नो गगनः प्रचोदयात् ।

३६. गङ्गा गायत्री

ॐ गङ्गाये विद्महे विष्णु पाद्यै ।
धीम हि तन्नो भागीरथी प्रचोदयात् ।

३७. जल गायत्री

ॐ जल बिम्बाय विद्महे नील पुरुषाय।
धीम हि तन्नो अम्बु प्रचोदयात्।

३८. पृथ्वी गायत्री

ॐ पृथ्वी देव्यै विद्महे सहस्त्र मूर्तये।
धीम हि तन्नो नारायणी प्रचोदयात्।

३९. चन्द्र गायत्री

ॐ क्षीर पुत्राय विद्महे अमृत तत्वाय।
धीम हि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात्।

४०. रामानन्द गायत्री

ॐ पुण्यसदन्यै विद्महे सुशीला सुताय।
धीम हि तन्नो रामानन्दाचार्य प्रचोदयात्।

————

मनोकामना सिद्धि के लिए
गायत्री के विविध प्रयोग

नारदजी ने कहा—करुणानिधे! अब आप गायत्री की शान्ति के प्रयोगों का संक्षेप रूप से वर्णन कीजिए। भगवान नारायण कहते हैं—नारद! तुमने यह बड़ा ही गोप्य विषय पूछा है। द्विज को चाहिए, दूध वाली समिधाओं से एक हजार गायत्री का जप करके हवन करे। वे समिधायें शमी की हों। इससे भौतिक रोग और ग्रह शान्त हो जाते हैं अथवा सम्पूर्ण भौतिक रोगों की शान्ति के लिए द्विज क्षीर वाले वृक्ष अर्थात पीपल, गूलर, पाकड़ एवं वट की समिधाओं से हवन करे। जप और होम के पश्चात् हाथ में जल लेकर उससे सूर्य का तर्पण करे। इससे शान्ति प्राप्त होती है। जानु पर्यन्त जल में रहकर गायत्री का जप करके पुरुष सम्पूर्ण दोषों को शान्त कर सकता है। कण्ठपर्यन्त जल में जप करने से प्राणान्तकारी भय दूर हो जाता है। सभी प्रकार की शान्ति के लिए जल में डूबकर गायत्री का जप करना चाहिए।

सुवर्ण, चांदी, तांबा, मिट्टी अथवा किसी दूध वाले काष्ट के पात्र में रखे हुए पञ्चगव्य द्वारा प्रज्वलित अग्नि में क्षीर वाले वृक्ष की समिधाओं से एक हजार गायत्री का मंत्र उच्चारण करके हवन करे। प्रत्येक आहुति के समय मंत्र का पाठ करके पात्र में रखे हुए पंचगव्य से समिधा को स्पर्श कराकर हवन करे। हजार बार यों करे। हवन के पश्चात एक हजार गायत्री मंत्र पढ़कर पात्र में अवशिष्ट पंचगव्य का अभिमंत्रण करे और फिर मंत्र का स्मरण करते हुए कुशों द्वारा उस पंचगव्य से वहां के स्थान का प्रोक्षण करे। इसके बाद वहीं बलि देते हुए इष्ट देवता का ध्यान करे यों करने से

अभिचार से उत्पन्न हुई कृत्या और पाप का नाश हो जाता है। और देवता, भूत, पिशाच उसके वश में हो जाते हैं।

भूमि पर चतुष्कोण मण्डल लिखकर उसके मध्य भाग में गायत्री मंत्र पढ़कर त्रिशूल धंसा दे। इससे भी पिशाचों के आक्रमण से पुरुष बच सकता है। अथवा सब प्रकार की शान्ति के लिए पूर्वोक्त कर्म में ही गायत्री के एक हजार मंत्र से अभिमंत्रित करके त्रिशूल गाढ़े। वहीं सुवर्ण, चांदी, तांबा अथवा मिट्टी की नवीन दिव्य कलश स्थापित करे। उस कलश में छिद्र नहीं होना चाहिए। उसे वस्त्र से वेष्टित कर दे। बालू से बनी हुई वेदी पर उसे स्थापित करे। मंत्रज्ञ पुरुष जल से उस कलश को भर दे। फिर श्रेष्ठ द्विज चारों दिशाओं के तीर्थों का उसमें आवाहन करें। इलायची, चन्दन, कपूर, जायफल, गुलाब, मालती, बिल्वपत्र, विष्णु क्रान्ता, सहदेवी, धान, यव, तिल, सरसों तथा दूध वाले वृक्ष अर्थात् पीपल, गूलर, पाकड़ और वट के कोमल पल्लव उस कशल में छोड़ दे। उसमें सत्ताईस कुशों से निर्मित एक कूर्च रख दे। यों सभी विधि सम्पन्न हो जाने पर स्नान आदि से पवित्र हुआ जितेन्द्रिय बुद्धिमान ब्राह्मण एक हजार गायत्री के मंत्र से उस कलश को अभिमंत्रित करे। वेदज्ञ ब्राह्मण चारों दिशाओं में बैठकर सूर्य आदि देवताओं के मंत्रों का पाठ करें। साथ ही इस अभिमंत्रित जल से प्रोक्षण, पान और अभिषेक करे। इस प्रकार की विधि सम्पन्न करने वाला पुरुष भौतिक रोगों और उपचारों से मुक्त होकर परम सुखी हो सकता है। इस अभिषेक के प्रभाव से मृत्यु के मुख में गया हुआ मानव भी मुक्त हो जाता है।

द्विज शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे गायत्री का सौ बार जप करे। इससे वह भौतिक रोग एवं अभिचार

जनित महान भय से मुक्त हो जाता है। द्विज को चाहिए कि गुरुच को खण्ड-खण्ड करके उसे क्षीर में भिगोकर अग्नि में आहुति दे। इस प्रकार के होम को 'मृत्युञ्जय' कहते हैं। इसमें सम्पूर्ण व्याधियों का नाश करने की शक्ति है। ज्वर की शान्ति के लिए दूध में भिगोये आम के पत्तों से हवन करे क्षीराक्त मीठे वच का हवन करने से क्षयरोग दूर होता है। तीन मधु अर्थात् दूध, दही और घृत से किए हुए होम में राजयक्ष्मा को दूर करने की शक्ति है। खीर का हवन करके उसे भगवान सूर्य को अर्पण करे। फिर प्रसाद रूप से स्वयं प्राशन करे तो राजयक्ष्मा का उपद्रव शान्त हो जाता है। शंख के वृक्ष के पुष्पों से हवन करके कुष्ठरोग का निवारण करे। अपामार्ग के बीज से यदि हवन किया जाय तो मृगी दूर हो सकती है। क्षीरी वृक्ष की समिधा से हवन करने पर उन्माद रोग शान्त हो जाता है। गूलर की समिधा का हवन असाध्य प्रमेह रोग को दूर करता है। मधु अथवा ईख के रस से हवन करके पुरुष प्रमेह रोग को शान्त करे। त्रिमधु अर्थात् दूध, दही और घृत के हवन से मसूरिया (चेचक) रोग शान्त हो जाता है। कपिला गौ के घृत से हवन करके भी मसूरिका का रोग शान्त किया जा सकता है। गूलर, वट और पीपल की समिधाओं से हवन करके गौ, घोड़े और हाथी के रोग को दूर करे। बिजली गिरने और भूकम्प आदि के लक्षित होने पर जंगली बेंत की समिधा से सात दिनों तक हवन करे। ऐसा करने से राष्ट्र में राज्यसुख विद्यमान रहता है। गायत्री का जप करके कुश से स्पर्श करता हुआ पुरुष भौतिक रोग और विष आदि के भय से रोगों को मुक्त कर देता है। अभिमंत्रित जल का पान करके, भूत, प्रेत आदि के उपद्रवों से मनुष्य मुक्त हो जाते हैं। भूतादि के उपद्रव को शान्त करने के लिए गायत्री मंत्र

का सौ बार उच्चारण करके अभिमंत्रित किए हुए भस्म को सिर पर धारण करे। यदि स्वयं ऐसा करने में अशक्त हो तो दक्षिणा देकर ब्राह्मण द्वारा करवाने की चेष्टा करे।

तदनन्तर पुष्टि, श्री और लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए द्विज को चाहिए कि पुष्पों की आहुति दे। लक्ष्मी चाहने वाला पुरुष लाल पुष्पों से हवन करे। इससे उसे लक्ष्मी प्राप्त हो जाती है। एक सप्ताह तक लाल कमल की सौ आहुति देने पर सुवर्ण की प्राप्ति होती है। गायत्री मंत्र का उच्चारण करके सूर्य तर्पण करने से जल में छिपा हुआ सुवर्ण प्राप्त कर लेता है। केवल दूध पीकर गायत्री का जप करता रहे। इससे एक सप्ताह में वह मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है। यदि मौन रहकर बिना कुछ खाये-पिये जप करे तो तीन रात में यम के पाश से मुक्त हो जाता है। आयु, आरोग्यता और लक्ष्मी चाहने वाले को तीन महीने तक जप करना चाहिए। आयु, लक्ष्मी, पुत्र, स्त्री और यश प्राप्ति को चार मास तक जप करे। पुत्र, स्त्री, आयु, आरोग्य, लक्ष्मी और विद्या—इनकी कामना करने वाले को पांच महीने तक एक हजार के नियम से जप करने का विधान है। यों जितने-जितने मनोरथ अधिक हों, उसी के क्रम से महीने की संख्या भी बढ़नी चाहिए।

————

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन)
हरिद्वार

गायत्री अर्थ संग्रह : गायत्री चंद्रिका सहित

स्वामी सुरेश्वरानंद जी द्वारा संग्रहीत

प्रस्तुत ग्रन्थ में गायत्री वेदसार निरूपण, गायत्री शब्द निरूक्ति, प्रणव विचार, याज्ञवल्क मुनि कृति गायत्री मंत्र का अर्थ, भारद्वाज मुनि कृत व्याख्या, माधवाचार्यकृत व्याख्या, विद्यारण्य मुनि कृत व्याख्या, गायत्री जप साधन, गायत्री जप प्रकार निरूपण, आसन, जपमाला, पाणिमाला, कूर्मचक्र, होम विधि, मुद्रा विधि, मुद्रा लक्षण, कवच, ध्यान, पंचमुद्रा लक्षण, विसर्जन मुद्रा लक्षण, शाप विमोचन, गायत्री तर्पण ।त्रिधि, सन्ध्या विधियाँ, गायत्री मंत्र, विनियोग मंत्र, गायत्री पूजन और पुरश्चरण आदि का अपूर्व संग्रह है।

पांतजलि योग सूत्र : योगदर्शन

मूल, अनुवाद एवं व्याख्या : श्री नंदलाल दशोरा

पुस्तक की विषय सूची को चार भागों में विभाजित किया गया है १. समाधिपाद २. साधनपाद ३. विभूतिपाद ४. कैवल्यपाद। प्रथम भाग में —- योगशास्त्र का आरम्भ और योग लक्षण, चित्त की वृत्तियों के भेद और उनके लक्षण, चित्त वृत्तियों का निरोध, समाधि वर्णन, मन को स्थिर करने के उपाय, समाधि के भेद व उनका फल। द्वितीय भाग में — क्रियायोग का स्वरूप और फल, अविद्या आदि पांच कलेश, कलेशों के नाश का उपाय, दृष्य और दृष्टा का स्वरूप, प्रकृति और पुरुष का संयोग तथा योग के पांच अंगों का वर्णन है। तृतीय भाग में — धारणा ध्यान व समाधि का वर्णन, संयम का निरूपण, प्रकृति जनित पदार्थों का परिणाम, विवेक ज्ञान और कैवल्य। चतुर्थ भाग में — सिद्धि प्राप्ति के हेतु, संस्कार शून्यता, वासनायें प्रकट होना व उनका स्वरूप, गुणों का वर्णन, चित्त का वर्णन, धर्ममेघ समाधि और कैवल्यावस्था।